कथा सरिता

कामयाबी की बाधा

एक बार स्वामी विवेकानंद के आश्रम में एक व्यक्ति आया जो देखने में बहुत दुःखी लग रहा था। वह व्यक्ति आते ही स्वामी जी के चरणों में गिर पड़ा और बोला, "महाराज! मैं अपने जीवन से बहुत दुःखी हूँ। मैं अपने दैनिक जीवन में बहुत मेहनत करता हूँ। काफी लगन से भी काम करता हूँ। लेकिन कभी भी सफल नहीं हो पाया। भगवान ने मुझे ऐसा नसीब क्यों दिया है कि मैं पढ़ा-लिखा और मेहनती होते हुए भी कभी कामयाब नहीं हो पाया हूँ?" स्वामी जी उस व्यक्ति की परेशानी को पल भर में ही समझ गए। उन दिनों स्वामी जी के पास एक छोटा सा पालतू कुत्ता था, उन्होंने उस व्यक्ति से कहा, "तुम कुछ दूर ज़रा मेरे कुत्ते को सैर करा लाओ, फिर मैं तुम्हारे सवाल का जवाब दूंगा।"

उस व्यक्ति ने बड़े ही आश्चर्य से स्वामी जी की ओर देखा और फिर कुत्ते को लेकर कुछ दूर निकल पड़ा। काफी देर तक अच्छी खासी सैर करा कर जब वो व्यक्ति वापस स्वामी जी के पास पहुँचा तो स्वामी जी ने देखा कि उस व्यक्ति का चेहरा अभी भी चमक रहा था, जबकि कुत्ता हाँफ रहा था और बहुत थका हुआ लग रहा था। स्वामी जी ने उससे पूछा कि "ये कुत्ता इतना ज़्यादा कैसे थक गया? जबकि तुम तो अभी भी साफ सुथरे और बिना थके दिख रहे हो।"

व्यक्ति ने कहा, "मैं तो सीधा अपने रास्ते पर चल रहा था, लेकिन ये कुत्ता गली के सारे कुत्तों के पीछे भाग रहा था और लड़कर फिर वापस मेरे पास आ जाता था। हम दोनों ने एक समान रास्ता तय किया है लेकिन फिर भी इस कुत्ते ने मेरे से कहीं ज़्यादा दौड़ लगाई है इसीलिए ये थक गया है।" स्वामी जी ने मुस्करा कर कहा, "यही तुम्हारे सभी प्रश्नों का जवाब है, तुम्हारी मंज़िल तुम्हारे आस पास ही है, वो ज़्यादा दूर नहीं है, लेकिन तुम मंज़िल पर जाने की बजाय दूसरे लोगों के पीछे भागते रहते हो और अपनी मंज़िल से दूर होते चले जाते हो।"

मित्रों, यही बात हमारे दैनिक जीवन पर भी लागू होती है। हम लोग हमेशा दूसरों का पीछा करते रहते हैं कि वो डॉक्टर है तो मुझे भी डॉक्टर बनना है। वो इंजीनियर है तो मुझे भी इंजीनियर बनना है, वो ज़्यादा पैसे कमा रहा है तो मुझे भी कमाना है। बस इसी सोच की वजह से हम अपने टैलेंट को कहीं खो बैठते हैं और जीवन एक संघर्ष मात्र बनकर रह जाता है। तो दूसरों की होड़ मत कीजिए और अपनी मंज़िल खुद तय कीजिए। अगर आप होड़ या प्रतिद्वंदिता करना ही चाहते हैं तो स्वयं के सम्मुख स्वयं को ही रखिए, अपना मापदंड स्वयं बनिये, आप इस तरह देखिये कि आप स्वयं पिछले महीने या वर्ष जो थे उससे कुछ बेहतर हुए या नहीं, यही आपका उचित मापदंड होना चाहिए। अर्थात् स्वयं से ही स्वयं को मापिए।

आत्मनिरीक्षण एवं आत्मोन्नति आपका स्वयं का दायित्व है न कि किसी और का।

समर्पण और अहंकार

पेड़ की सबसे ऊंची डाली पर लटक रहा नारियल रोज़ नीचे नदी में पड़े पत्थर पर हँसता और कहता कि तुम्हारी तकदीर में भी बस एक जगह पड़े रह कर नदी की धाराओं के प्रवाह को सहन करना ही लिखा है, देखना एक दिन यूं ही पड़े पड़े घिस जाओगे। मुझे देखो कैसी शान से उपर बैठा हूँ। पत्थर रोज़ उसकी अहंकार भरी बातों को अनसुना कर देता। समय बीता, एक दिन वही पत्थर घिस-घिस कर गोल हो गया और विष्णु प्रतीक शालिग्राम के रूप में जाकर एक मन्दिर में प्रतिष्ठित हो गया। एक दिन वही नारियल उस शालिग्राम की पूजन सामग्री के रूप में मन्दिर में लाया गया। शालिग्राम ने नारियल को पहचानते हुए कहा, "भाई देखो, घिस-घिस कर परिष्कृत होने वाले ही प्रभु के प्रताप से इस स्थिति को प्राप्त करते हैं, सबके आदर का पात्र भी बनते हैं, जबकि अहंकार के मतवाले अपने ही दम्भ के डसने से नीचे आ गिरते हैं। तुम जो कल आसमान पर थे, आज मरे मेरे आगे टूट कर, कल से सड़ने भी लगोगे, पर मेरा अस्तित्व अब कायम रहेगा। भगवान की दृष्टि में मूल्य समर्पण का है, अहंकार का नहीं।

प्रार्थना

परम सिद्ध सन्त रामदास जी जब प्रार्थना करते थे तो कभी उनके होंठ नहीं हिलते थे। शिष्यों ने पूछा, हम प्रार्थना करते हैं तो होंठ हिलते हैं। आपके होंठ नहीं हिलते? आप पत्थर की मूर्ति की तरह खड़े हो जाते हैं। आप कहते क्या हैं अन्दर से? क्योंकि अगर आप अन्दर से भी कुछ कहेंगे तो होंठों पर थोड़ा कंपन आ ही जाता है। चेहरे पर बोलने का भाव आ जाता है, लेकिन आपके चेहरे पर वह भाव भी नहीं आता!

संत रामदास जी ने कहा, मैं एक बार राजधानी से गुज़रा और राजमहल के सामने द्वार पर मैंने सम्राट को खड़े देखा और एक भिखारी को भी खड़े देखा। वह भिखारी बस खड़ा था। फटे-चिथड़े कपड़े थे उसके शरीर पर। जीर्ण ज़र्ज़र देह थी, जैसे बहुत दिनों से भोजन न मिला हो। शरीर सूख कर कांटा हो गया था। बस आँखे ही दीयों की तरह जगमगा रही थीं। बाकी जीवन जैसे सब तरफ से विलीन हो गया हो। वह कैसे खड़ा था, यह भी आश्चर्य था। लगता था अब गिरा, तब गिरा।

सम्राट उससे बोला, बोलो क्या चाहते हो? उस भिखारी ने कहा, अगर मेरे आपके द्वार पर खड़े होने से, मेरी मांग का पता नहीं चलता, तो कहने की कोई ज़रूरत नहीं। क्या कहना है और! मैं द्वार पर खड़ा हूँ, मुझे देख लो। मेरा होना ही मेरी प्रार्थना है।

संत रामदास जी ने कहा कि उसी दिन से मैंने प्रार्थना बंद कर दी। मैं परमात्मा के द्वार पर खड़ा हूँ। वह देख लेंगे। मैं क्या कहूँ? अगर मेरी स्थिति कुछ नहीं कह सकती तो मेरे शब्द क्या कह सकेंगे! अगर वह मेरी स्थिति नहीं समझ सकते तो मेरे शब्दों को क्या समझेंगे?

अतः सच्चा भाव व दृढ़ विश्वास की परमात्मा की याद के लक्षण हैं। यहाँ कुछ मांगना शेष नहीं रहता। आपका प्रार्थना में होना ही पर्याप्त है।

शांतिवन-आबू रोड। गुरुनानक देव के 550 वें प्रकाश उत्सव के तहत करनाल से निफा कल्चरल ग्रुप की 40 हज़ार कि.मी. की यात्रा पर निकले जत्थे के शांतिवन पहुंचने पर समूह के प्रमुख सरदार प्रीतपाल सिंह पन्नू द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी का सम्मान किया गया। इस मौके पर उपस्थित हैं करनाल सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. प्रेम बहन, वहाँ के निदेशक ब्र.कु. मेहरचंद, संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय तथा अन्य।

दिल्ली-करोल बाग(पाण्डव भवन)। कार्यक्रम के पश्चात् श्री राम कॉलेज,दिल्ली युनिवर्सिटी के डॉ. विनीत मेहता,डायरेक्टर,फिज़िकल एजुकेशन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विजय बहन। साथ हैं ब्र.कु. विकास।

पहारी-भरतपुर(राज.)। एस.डी.एम. रामरतन शर्मा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रीति।

उदयपुर-राज.। 'म्हारो राजस्थान समृद्ध राजस्थान अभियान' को शिव ध्वज लहराकर समाज की विभिन्न सेवाओं हेतु रवाना करते हुए नगर निगम मेयर चंद्र सिंह कोठारी, सोजतिया ज्वैलर्स के ऑनर रंजीत सिंह सोजतिया, ब्र.कु. रीटा तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

हाथरस-उ.प्र.। 108 वां मेला श्री दाऊ जी महाराज के रिसीवर शिविर में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'सर्वधर्म सम्मेलन' का शुभारम्भ करते हुए नगर पंचायत अध्यक्ष आशीष शर्मा, ज्ञानामृत सहसंपादिका ब्र.कु. उर्मिला,मा.आबू, श्री धाम वृंदावन से बहन कीर्ति किशोरी जी, ब्र.कु.सीता, ब्र.कु. सुरेश,मा.आबू, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी,अलीगढ़ से डॉ. मुफ्ती जाहिद तथा अन्य।

कोटद्वार-उत्तराखण्ड। स्नेह मिलन कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं पूर्व शिक्षामंत्री सुरेन्द्र सिंह नेगी, नगर की मेयर हेमलता नेगी, ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य पत्रकार बंधु।

सरायपाली-ओडिशा। विश्व बंधुत्व दिवस पर वृक्षारोपण करते हुए ब्र.कु. भाई-बहनें।

अररिया-बिहार। 'सफल व्यवसायी-सशक्त राष्ट्र अभियान' का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. अनीता,हैदराबाद, ब्र.कु. प्रीति मुम्बई, ब्र.कु. कृष्णा अग्रवाल, जिला संचालिका ब्र.कु. उर्मिला, बैंक कर्मी संजय गुप्ता, व्यवसायी राजप्रकाश बांठिया, मोहिनी देवी मेमोरियल स्कूल के निदेशक डॉ. संजय प्रधान तथा लीड बैंक कर्मी रतन ठाकुर।

झालावाड़-राज.। विश्व हृदय दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डॉ. अशोक नागर,कैंसर रोग विशेषज्ञ, डॉ. मंजू अग्रवाल,स्त्री रोग विशेषज्ञ, नगरपरिषद अध्यक्ष मनीष शुक्ला, पूजा तेजी,धाविका, पत्रकार जीतेन्द्र जी तथा ब्र.कु. मीना दीदी।